शैकों का उपयोग

शैक औषधि के रूप में

अनेकों भारतीय वन्य जाति के समूह शैकों को औषधि की तरह उपयोग में लाते हैं। आयुर्वेदिक, यूनानी तथा होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में शैक जातियों (छरीला) का उपयोग होता है। शैक तथा उनके रासायनिक तत्वों में एंटी बॉयोटिक, एंटीफंगल, एंटीकैन्सर, एंटी ऑक्सीडेंट, एंटीइन्फ्लामेटरी गुण होते है। अस्निक एसिड विभिन्न शैक जातियों में उपस्थित एक सामान्य रासायनिक तत्व है जिसके अनेकों चिकित्सा उपयोग ज्ञात हैं। भारत में औषधीय शैक की कुल 140 जातियाँ ज्ञात हैं।

अस्निक एसिड बनाने वाले कुछ शैक

रेमलाइना *अस्निया* *क्लेडोनिया*

प्रकृति में डाक्टराइन सिग्नेचर का सिद्धान्त

इस सिद्धान्त के अनुसार प्रकृति में पाये जाने वाले पौधे या उनके अंग मानव शरीर के अनेक अंगों के अनुरूप होते हैं तथा इन पौधों का उपयोग मानव शरीर के उन अंगों की बीमारियों के उपचार में किया जा सकता है (लाइक ऐफैक्ट द लाइक/ अनुरूप पौधा अनुरूप अंग को प्रभावित करता है।)

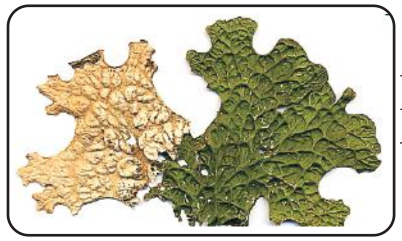

लोबेरिया पलमोनेरिया

फेफड़ों की तरह दिखने वाला यह शैक फेफड़े की बीमारियों में उपयोग में लाया जाता है।

जैनथोरिया पेरीटीना

पीले रंग के कारण वन्य जाति के लोग इस शैक को पीलिया की बीमारी में उपयोग में लाते है।

पेल्टीजीरा केनाइना

कुत्ते के दाँतों के आकार की जननीय अंगों के कारण इस शैक का उपयोग कुत्ते के काटने पर किया जाता है।

वन्य जातियों द्वारा शैकों का औषधीय उपयोग

हिटरोडर्मिया डायडिमाटा

सिक्किम के नेपाली वन्य जाति के लोग इस शैक को घावों या कटे भाग पर लगाकर और अधिक पकने या खराब होने से बचाने के लिये उपयोग करते हैं।

स्टीरियोकोलोन हिमालयन्से

उत्तर सिक्किम के लेप्चा वन्य जाति के लोग इस शैक का उपयोग मूत्ररोग में एन्टीडोट की तरह करते है।

पार्मोट्रिमा सेन्क्टी-एंजिलाई

मध्य प्रदेश के गोंड तथा ओरन वन्य जाति के लोग इस शैक का उपयोग त्वचा में रिंग वार्म जैसी बीमारी के उपचार के लिए करते है।

अस्निया लोंगिसिमा

उत्तराखण्ड के भोटिया एवं गढ़वाली वन्य जाति के लोग इस शैक का उपयोग टूटी हड्डियों को जोड़ने में करते हैं।

पेल्टीजीरा पोलीडेकटिला

उत्तर सिक्किम के लेप्चा वन्य जाति के लोग इस शैक को घाव से रक्त प्रवाह को रोकने के लिए उपयोग में लाते है।

थैमनोलिया वर्मीकूलेरिस

भोटिया वन्य जाति में इस शैक को दही के बर्तनों में लगने वाले कीड़ों को मारने में प्रयोग किया जाता है।

सी०एस०आई०आर०-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान एवं उत्तर प्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड, लखनऊ

मसालों में शैक का उपयोग

गरम मसालों तथा मीट मसालों में शैक की अनेक प्रजातियों का उपयोग होता है। इन्हें पूरा या पाउडर की तरह विभिन्न सब्जियों या मीट जैसे खाद्य पदार्थो की महक बढ़ाने के लिए खाने में डाला जाता है। भारतीय बाजारों में उपलब्ध शैक वास्तव में अनेकों जातियों का मिश्रण होता है जिसमें *एवरनियासट्रम सिरहाटम, पार्मोट्रिमा टिक्टोरम, पार्मोट्रिमा रेटीकूलाटा, हिटरोडर्मीया, रेमलाइना* तथा *अस्निया* आदि जातियाँ मुख्यतया पायी जाती हैं।

बाजार में मसालों के रूप में बिकने वाले कुछ शैक

एवरनियासट्रम सिरहाटम

पार्मोट्रिमा टिक्टोरम

पार्मोट्रिमा रेटीकूलाटा

बाजार में बिकने के लिए प्रदर्शित शैक मसाले

शैक का रंगाई में उपयोग

रौसिला मॉनटेगनाई नामक शैक का प्राचीन समय में लिटमस पेपर डाई (एसिड–बेस सूचक) के रूप में प्रयोग होता था। शैक में उपस्थित रासायनिक पदार्थ पानी या अमोनिया के साथ सिल्क, सूत तथा ऊन को सुन्दर पीले, गुलाबी, बैंगनी, भूरे रंग प्रदान करते हैं।

रौसिला मॉनटेगनाइ

शैक रंगों द्वारा रंगा ऊन

शैक सुगंध उद्योग में

उत्तर प्रदेश के कन्नौज जिले में बड़ी मात्रा में हिमालय क्षेत्र से शैकों को एकत्रित कर उनसे 'हिना अत्तर' नामक सुगन्धित इत्र बनाया जाता है। शैकों को पानी में उबाल कर वाष्प को चंदन के तेल में प्रवाहित कर हिना अत्तर नामक इत्र तैय्यार होता है।

स्यूडइवरनिया फ़ूरफ़ूरेसीया
सुगंध उद्योग में उपयोग में लाया जाने वाला शैक

शैक चारा

ठण्डे प्रदेशों में जानवरों के चारे की कमी होने पर अनेकों शैक जातियों को चिड़ियाघरों में जानवरों को खिलाया जाता है।

भारत में कस्तूरी मृग को *अस्निया* शैक की अनेकों जातियां चारे के रूप में खिलाई जाती है।

शैक की मेंहदी/हिना उपयोग

गढ़वाल हिमालय में चरवाहे पत्थरों पर उगने वाले शैक *ब्यूलिया सबसोरोरिओईडिस* को गीला कर छोटे–छोटे पत्थरों से घिस कर बने पेस्ट से हाथों में मेंहदी रचाते हैं।

शैक हवन सामग्री में

कांगड़ा के गद्दी वन्य जाति के लोग अनेकों शैकों को जैसे *एवरनियासट्रम सिरहाटम, पार्मोट्रिमा नीलगिरीरन्स, मीलेनेलिया इनफ्यूमाटा, सिट्रालिया कोलाटा* का उपयोग हवन सामग्री बनाने के लिये करते है।

शैक का शाक भाजी उपयोग

सिक्किम के लेप्चा वन्य जाति *एवरनियासट्रम सिरहाटम* को सब्जी की तरह उबाल कर खाते हैं।

शैक का स्टफिंग में उपयोग

उत्तराखण्ड के भोटिया तथा गढ़वाली वन्य जाति के लोग वहाँ बहुतायत में पाये जाने वाले *अस्निया लोंगीसीमा* का उपयोग बिस्तर तथा तकिया बनाने में करते हैं।

शैक का सजावट में उपयोग

कुछ वन्य जाति के लोग शैक प्रजातियों को अपने गले या सिर पर सजावट के लिए लगाते हैं।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
निदेशक
सी०एस०आई०आर० - राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान
राणा प्रताप मार्ग, लखनऊ-226001
ईमेलः director@nbri.res.in वेबसाईटः www.nbri.res.in
फोनः 0522 2205831

प्रायोजक
उत्तर प्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड
पिकप भवन, गोमतीनगर
लखनऊ-226010
ईमेलः upstatebiodiversityboard@gmail.com
वेबसाईटः www.upsbdb.org फोनः 0522 4006746

संकलनः एस० नायका एवं डी० के० उप्रेती